दिल्ली विश्वविद्यालय छात्र संघ चुनाव 2001 के अवसर पर

दिशा छात्र संगठन द्वारा आम छात्रों के बीच वितरित पर्चा

छात्र संघ चुनाव के उम्मीदवारों से आखिर क्यों नहीं पूछते आप ये सवाल

● छात्र राजनीति को धनबल-शस्त्रबल से मुक्त करने का आपके पास क्या कार्यक्रम है?

● कैम्पसों और कालेजों को सतरंगे पोस्टरों-पर्चों से पाट देने, हजारों गैलन पेट्रोल फूंकने और हजारों लीटर बियर और व्हिस्की बहाने के लिये आपको फाइनेंसर कहां से मिलते हैं? जीतने के बाद आप सूद सहित उनका कर्ज उतारेंगे या हम छात्र-छात्राओं की बात सुनेंगे?

● आपकी जवाबदेही टिकट देने वाले अपनी पार्टी के नेताओं के प्रति है या वोट देने वाले छात्रों के प्रति?

● पिछले दस साल में छात्रसंघ बारी-बारी से कभी इस, कभी उस पार्टी के हाथ में रहा। और हर साल फीसें बढ़ती रहीं – छात्रों के प्रतिनिधि खामोश रहे। है कोई जवाब?

● यहां से निकलने के बाद चुनावी राजनीति के कारोबार में आपका भविष्य तो सुरक्षित है। पर अपने मतदाताओं के भविष्य के बारे में आपने कभी सोचा है? कैम्पस के बाहर भटकते करोड़ों बेरोजगार नौजवानों के लिये संघर्ष की कोई योजना है आपके पास?

● आप छात्र राजनीति में एम.पी.-एम.एल.ए. बनने की ट्रेनिंग लेने आये हैं या देश की असली आज़ादी की राह का क्रान्तिकारी योद्धा बनने?

● देश को नोच-खसोट रहे देशी-विदेशी लुटेरों के खिलाफ क्या आप छात्रों की आवाज़ बुलन्द करेंगे? क्या आपकी पार्टी आपको इसकी इजाजत देगी?

● जाति, धर्म, क्षेत्र के नाम पर वोट बटोरने के बाद आप छात्रों को एकजुट करने का दावा क्यों और कैसे करते हैं?

● कैम्पस में बढ़ती गुंडागर्दी, छेड़खानी, छात्राओं के उत्पीड़न को क्या आप रोकेंगे? क्या अपनी गुंडावाहिनी के दम पर?

● क्या आप छात्रसंघ के आय-व्यय का वास्तविक ब्यौरा सार्वजनिक करेंगे? क्या आप पिछले दस साल की आडिटिंग छात्रों से करायेंगे?

दिशा का संकल्प
खड़ा करेंगे एक नया विकल्प!
दिशा का रास्ता
परिवर्तनकामी छात्रों का रास्ता!

दिशा का नारा–भविष्य हमारा!

छात्रों-नौजवानों के लिए जनरल नालेज के कुछ जरूरी सबक

छात्रसंघ क्या है?
बेहतर शिक्षा, बेहतर भविष्य के अधिकार के लिए संघर्ष का मंच।

और आज का छात्रसंघ?
एम.पी.-एम.एल.ए. बनने का ट्रेनिंग सेंटर!
अपराध और राजनीति का संगम कराने की ट्रेनिंग सेंटर!

छात्रसंघ चुनाव कैसे जीता जाता है?
धन से, बल से, छल से! फैशन से, ग्लैमर से!
सूरत से, मूरत से! जाति से, क्षेत्र से, धर्म से!
गुंडों से, मुस्टंडों से, पंडों से!
मुर्गी के अंडों से, बोतल से, डंडों से!
भ्रष्ट नेताओं के, मंत्रियों के आशीर्वाद से!
ठेकेदारों-मठाधीशों के घात-प्रतिघात से!

छात्रसंघ क्या करता है?
फैशन शो कराता है! पैसे उड़ाता है!
पोस्टर छपवाता है! और क्या करता है... पता नहीं!

छात्रसंघ क्या नहीं करता है?
फीस बढ़ने पर, सीट घटने पर
अधिकार छिनने पर, दमन होने पर
निरर्थक शिक्षा पर, भविष्य के अंधेरे पर
कुछ नहीं करता है!

छात्र नेता चुनाव में लाखों का इनवेस्टमेंट क्यों करते हैं?
साल भर में सूद-ब्याज सहित वापसी की पक्की गारंटी!
संसद-विधानसभा के अखाड़े में उतरने की मुफ्त ट्रेनिंग!
ठेके, लाइसेंस, धनवसूली का बोनस!
विशेष इनामी स्कीम – सभी वारंटों-मुकदमों से पूरी आज़ादी!

क्या ये ऐसे ही चलता रहेगा?
नहीं, नहीं, नहीं! कतई नहीं!!

क्यों?
इसलिए कि –अब पानी नाक के ऊपर जा चुका है!
इसलिए कि –हम एक ज़िन्दा कौम हैं और ज़िन्दा कौम के बहादुर युवा ज़िन्दा सवालों पर सोचते हैं!
इसलिए कि –अभी इस देश के युवाओं का विवेक मरा नहीं है, वीरता ज़िन्दा है, इंसाफपसंदगी ज़िन्दा है!
इसलिए कि –भारत के युवाओं के यौवन का पराक्रम ज़िन्दा है!